Faculty Name – Vikas Kumar Tiwari

College Name – Shakuntalam Institute of Teacher's Education, Sasaram

Class – B. Ed. 1st year

Paper – C-3 (Learning and Teaching)

Unit – 1.

Topic – अधिगम और बुद्धि (Learning and Intelligence)

Part – 2

बुद्धि के सिद्धान्त

(Theories of Intelligence)

बुद्धि के सिद्धान्त से अभिप्राय बुद्धि की प्रकृति तथा संरचना के क्रमबद्ध स्पष्टीकरण से है। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की प्रकृति तथा संरचना को जानने के लिए अनेक विश्लेषणात्मक अध्ययन किये है, जो निम्नलिखित है—

1. एक-कारक सिद्धान्त — अल्फ्रेड बिने (सहयोगी - स्टर्न, टरमन)
2. द्विकारक सिद्धान्त — स्पीयर मैन (इंग्लैन्ड), 1904
3. बहु-कारक सिद्धान्त — थॉर्नडाइक
4. समूह-कारक सिद्धान्त — थर्सटन
5. पदानुक्रमिक सिद्धान्त — फिलिप बर्नन
6. बुद्धि संरचना — जे०पी० गिलफोर्ड
7. तरल-ठोस बुद्धि सिद्धान्त — आर० बी० कैटल
8. बहु-बुद्धि संरचना — हावर्ड गार्डनर
9. संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त — जीन पियाजे
10. त्रि-तन्त्र सिद्धान्त — राबर्ट स्टैनबर्ग
11. त्रि-स्तर सिद्धान्त — जोहन बी० कारोल

1. एक-कारक सिद्धान्त (Uni-factor Theory)

बुद्धि के एककारक सिद्धान्त का प्रतिपादन अल्फ्रेड बिने एवं उनके दो सहयोगी स्टर्न व टरमन द्वारा किया गया था। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि एक ऐसी अविभाज्य इकाई के रूप में कार्य करती है जिसके द्वारा समस्त मानसिक क्रियायें, प्रारम्भ, सम्पन्न, तथा नीयंत्रित होती है। यह सिद्धान्त सबसे प्राचीन व प्रथम सिद्धान्त के रूप में जाना जाता है। यह सिद्धान्त बुद्धि मापन हेतु परीक्षण निर्माण के प्रथम 35 वर्षों तक अत्यधिक प्रचलित रहा परंतु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने कलान्तर में इस सिद्धान्त को लगभग अस्वीकार कर दिया है।

2. द्विकारक सिद्धान्त (Two-Factor Theory)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन स्पियरमैन (Spearman's) ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी व्यक्ति में सामान्यतः दो प्रकार की बुद्धि होती है—

(i) सामान्य योग्यता (G-General-Factor)
(ii) विशिष्ट योग्यता (S-Specific-Factor)

(i) सामान्य योग्यता (G-Factor) :- स्पियरमैन के अनुसार सामान्य योग्यता सब व्यक्तियों में कम या अधिक मात्रा में मिलती है। इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं—

1. सामान्य योग्यता व्यक्ति में जन्मजात होती है।
2. यह योग्यता व्यक्ति के दैनिक कार्यों में परिलक्षित होती है।
3. जिस व्यक्ति में सामान्य योग्यता जितनी अधिक होगी, वह उतना ही अधिक सफल होगा।
4. सामान्य योग्यता व्यक्तियों में पृथक्-पृथक् होती है।
5. सामान्य योग्यता स्थिर रहती है अर्थात् घटती-बढ़ती नहीं है।
6. इसे सामान्य योग्यता (G Factor) इस लिए कहा जाता है, क्योंकि सभी प्रकार की मानसिक क्रियाओं को करने में इसकी आवश्यकता होती है।

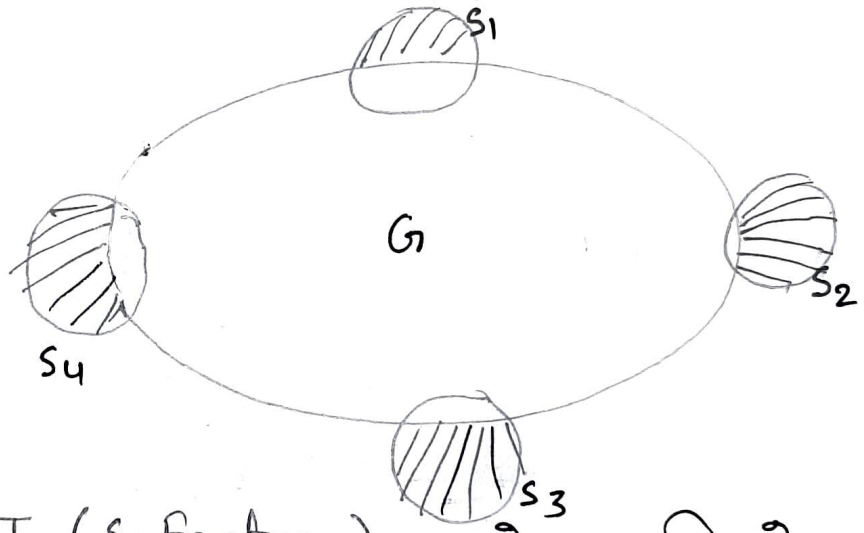

(ii) विशिष्ट योग्यता (S-Factor) — प्रत्येक व्यक्ति में सामान्य योग्यता के अतिरिक्त कुछ न कुछ विशिष्ट योग्यताएँ भी हो सकती हैं। एक व्यक्ति जितने ही क्षेत्रों में या विषयों में कुशल होता है, उसमें उतनी ही विशिष्ट योग्यतायें पाई जाती हैं। इनकी मुख्य विशेषताएँ हैं—

1. विशिष्ट योग्यता का तात्पर्य उस तत्व से है, जो विशेषकार्यों से प्राप्त होता है।
2. विशिष्ट योग्यताएँ अर्जित की जाती हैं, जैसे सफल संगीतकार में संगीतज्ञ बनने के गुण होते हैं।

3. विशिष्ट योग्यताएँ अनेक प्रकार की होती हैं, जो एक दूसरे से स्वतन्त्र होती हैं।

4. जिस व्यक्ति में जैसा विशिष्ट तत्व अधिक होगा, वह व्यक्ति वही विशिष्ट योग्यता रखता होगा; जैसे सचिन अच्छा बल्लेबाज है तथा कुम्बले अच्छा बॉलर।

5. सामान्य योग्यता का एक योग्यता का दूसरी योग्यता में स्थानान्तरण हो जाता है परन्तु विशिष्ट योग्यता का एक योग्यता से दूसरी योग्यता में स्थानान्तरण नहीं होता।

3. बहु-कारक सिद्धान्त (Multi factor theory)

बहु कारक सिद्धान्त का प्रतिपादन एडवार्ड ली थार्नडाइक ने सन् 1928 में किया था इसमें उन्होंने बुद्धि में बहुत सारे कारकों का वर्णन किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि अनेक स्वतंत्र कारकों से मिलकर बनी है। इन स्वतंत्र कारकों में से प्रत्येक कारक किसी विशिष्ट मानसिक योग्यता का आंशिक ढंग से प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति के द्वारा किसी भी मानसिक कार्य को सम्पन्न करने में ऐसे अनेक छोटे-छोटे कारक एक साथ मिलकर सहायता करते हैं।

4. समूह-कारक सिद्धान्त (Group factor theory)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन प्रोफेसर एल. एल. थर्सटन ने सन् 1938 में किया था। थर्सटन ने अपने सिद्धान्त में बुद्धि की व्याख्या करते हुए बताया कि बुद्धि न तो मुख्य रूप से सामान्य कारक द्वारा प्रभावित होती है और न ही किसी विशिष्ट कारक द्वारा प्रभावित होती है। इसमें कुछ ऐसी निश्चित मानसिक क्रियाएं होती हैं जो सामान्य रूप से मूल कारकों में सम्मिलित होती है। ये मानसिक क्रियाएं समूह का निर्माण करती हैं जो मनोवैज्ञानिक एवं क्रियात्मक एकता प्रदान करते हैं थर्स्टन ने अपने सिद्धान्त को कारक विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत किया। उनके अनुसार बुद्धि की संरचना कुछ मौलिक कारकों के समूह से होती है। दो या अधिक मूल कारक मिलकर एक समूह का निर्माण कर लेते हैं जो व्यक्ति के किसी क्षेत्र में उसकी बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। इन मौलिक कारकों में उन्होंने आंकिक योग्यता(N), शाब्दिक योग्यता(V), शब्द प्रवाह(W), स्थानिक योग्यता(S), तार्किक योग्यता(R), स्मृति योग्यता(M), प्रत्यक्षीकृत योग्यता को मुख्य माना।